

LOOK N LEARN

CHILDREN'S JAIN MAGAZINE

10th September 2017 | Every Fortnight | English, Hindi & Gujarati

क्या आपने पर्युषणपर्व को सार्थक किया?





क्या हम इस पर्युषण में
परमात्मा को अपने हृदय
में बिराजमान कर सके ?

या फिर हमने सिर्फ
धार्मिक बनने का और
धर्म प्रवृत्ति करने का
सिर्फ दिखावा किया है ?

चलो, अब हम इस पर
विस्तृत विचार करते हैं।

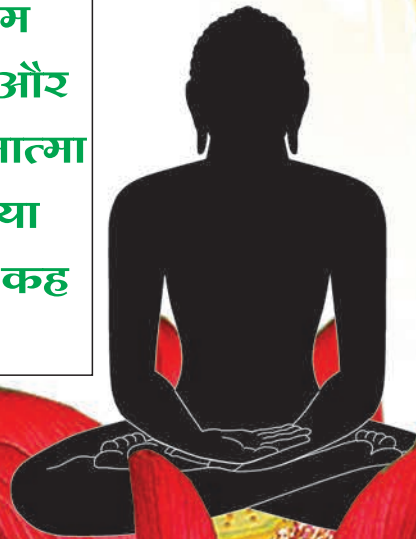
प्यारे बच्चों!

पिछले महिने हम सबने पर्युषण महापर्व उत्कृष्ट धर्म भावना और भक्ति से मनाया। इस पर्व में हम सबने नानाविध प्रकार की आराधना की जैसे... तपश्चर्या, त्याग, ध्यान, भक्ति, साधना, वैयावच्च और सेवा।

हम सब परमात्मा के प्रति हमारी भक्ति, प्रेम और अत्यंत अहोभाव व्यक्त करते हैं। हमारे भाव केवल परमात्मा जैसे बनने के, बाह्य तप एवं आभ्यांतर तप से आत्मा को शुद्ध करके सिद्ध बनने के लिए होते हैं।

लेकिन क्या आपको सच में लगता है कि हम इस में सफल या यशस्वी हुए हैं?

क्या हम सही रूप में,
सही आशय में परम
कृपालु, करुणामय और
करुणासिंधु ऐसे परमात्मा
महावीर के संतान या
वाशदातृ हैं... ऐसा कह
सकते हैं?



The true colours of Humanity!

कुछ दिनों पहले मुंबई में जो हुआ था, वह हम सब जानते हैं। जी... हाँ... बारिश का तुफान!!! ऐसी बारिश के जिसने हमेशा और व्यस्त मुंबई नगरी को ठप कर दिया था। दुनिया में बहोत जगह पे ऐसी नैसर्गिक आपत्तियाँ आती हैं। जैसे धरतीकंप, बाढ, सुखा, इमारत गिरना, बाँम्ब ब्लास्ट या आतंकवादी हमले ...। कभी कभी इन में से कुछ घटनाएँ हमारे आँखों के सामने घटित होती हैं।

प्यारे बच्चों, आज मैं आप सबसे एक सवाल पूछती हूँ। जब आप इस प्रकार की घटनाएँ देखते हो, न्यूज सुनते हो, तब आप क्या महसूस करते हो? क्या आपको लगता है, के मैं बहुत नसीबदार हूँ और भाग्यवान हूँ की मैं सुरक्षित हूँ। क्या आप उन लोगों का दर्द महसूस कर सकते हो? सही अर्थ में परमात्मा का भक्त और शिष्य वही होता है, जो सबका दर्द महसूस कर सके। सच्चा भक्त वही... जो सबके दुःख दर्द को अपना समजता है।

॥ आगम गाथा ॥

स्वामेभि सत्त्वे जीवा,
सत्त्वे जीवा वि स्वमंतु मे ।
मितीमे सत्त्व भूएसु,
वेरं मज्झं ण केणई ॥

एवमहं आलोइय,
पिंदिय गरिहिय दुगंछियं सम्मं ।
तिविहेण पडिक्कंतो,
वंदामि जिणे चउत्वीसं ॥

- श्री आवश्यक सूत्र

सर्व जीवोने स्वमावुं छुं। सर्व जीवो पण मारा अपराधनी मने क्षमा करे, बधां जीवो
साथे मारी मित्रता छे कोइनी साथे मारे वेर भाव नथी

I seek forgiveness from all living beings. I pray that they pardon me for all
my faults and may I have love and friendship towards every living being.
May I have no enmity in my heart for any soul.

आ रीते हुं आलोचना करीने आत्म साक्षीए निंदा करीने, गुरु साक्षीए गर्हा करीने,
जुगुप्सा करीने सम्यकरूपे, त्रण प्रकारे मन, वचन, कायाए करी पापकर्मोथी निवृत्त
थइने चोवीशे जिनेश्वरोने वंदन करुं छुं

In this manner, I confess and criticize all my faults. My soul is my witness
as I deeply regret and condemn all my sins before my Guru. With the right
vision, I refrain from my sins by 3 ways through thoughts, words and
actions and express my heartfelt Vandana to the 24 Tirthankars.

क्या आपने

कभी बारिश में फसे हुए किसी व्यक्ति की मदद की है?



कभी किसी भुखे को खाना परोसा है?



कभी किसी को उनके गंतव्य स्थान और मंझिल तक पहुँचने के लिए सवारी दी है?



कभी बारिश में फसे हुए किसी को अपने घर में आश्रय दिया है?



कभी बारिश में भिगे हुए व्यक्ति को, स्वच्छ और सुखे कपडे दिये है?



कभी किसी प्यासे को पानी पिलाया है ?



कभी किसी को कंबल दिया है ?



कभी किसी फसे हुए व्यक्ति को दवाईयाँ
या अन्य जरूरतमंद वस्तुओं के लिए पुछा है ?



क्या किसी को मुश्कील समय
में सांतवना दी है ?



क्या किसी को होसला दिया है ?



After the rains!

बारिश के तुफान के बाद...!!

बहुत सारे जानवर जैसे पक्षी, कुत्ते, बिल्ली, गाय, चुहा और भैंस सड़क पर गिरा हुआ या कुड़ादान में फेंका हुआ खाना खाकर अपना उदरनिर्वाह करते हैं। ऐसी तुफानी बारिश में यह खाना पानी के साथ बहकर नष्ट हो जाता है।

ऐसी परिस्थिती में यह हमारा कर्तव्य बनता है के हम हमारे आसपास की जगह में जाकर ऐसे जानवरों के खाने के व्यवस्था करें!

जैसे की हम हमारे घरके आँगन, छत या खिडकी में अनाज के दाने, पानी और गेटी जैसी चीख रख सकते हैं।





Nitya Prarthna



मैत्रीभावनुं पवित्र झरणुं

मैत्रीभावनुं पवित्र झरणुं मुझ हैयामां वह्या करे
शुभ थाओ आ सकल विश्वनुं, ऐवी भावना नित्य रहे;

गुणथी भरेला गुणीजनो देखी, हैयुं मारुं नृत्य करे,
ऐ संतोना चरणकमलमां, मुझ जीवननुं अर्ध्य रहे. मैत्री...

दीन, क्रूर ने धर्म विहोणां, देखी दिलमां दर्द रहे,
करूणा भीनी आंखोमांथी, अश्रुनो शुभ स्रोत वहे. मैत्री...

मार्ग भूलेला जीवन पथिक ने मार्ग चींधवा ऊभो रहुं,
करे उपेक्षा अे मारगनी, तोये समता चित्त धरूं. मैत्री...

वीर प्रभुनी धर्म भावना, हैये सौ मानव लावे,
वेर झेरनां पाप तजीने, मंगल गीतो ऐ गावे. मैत्री...

9 Punya

How can we bind 9 Punya?



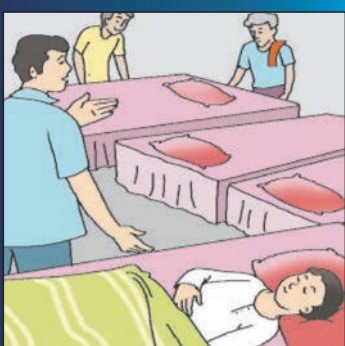
1. Anna Punya
To give food to the hungry



2. Paan Punya
To give water to the thirsty



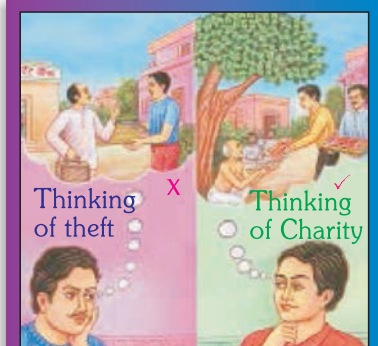
3. Layan Punya
Offering a place to stay



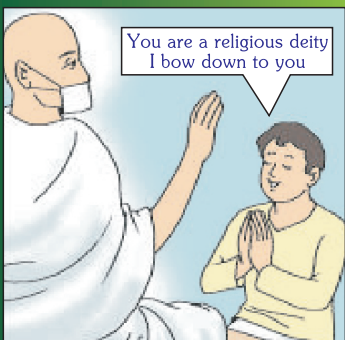
4. Shayan Punya
Giving someone a place to sleep



5. Vastra Punya
To provide clothes to others



6. Manah Punya
To think good of all



7. Vachan Punya
To speak politely and truthfully



8. Kaya Punya
To do good deeds



9. Namaskar Punya
Being respectful towards the great soul

Read the incidents carefully and write the number of Punya bounded by doing good deed

(Please refer the images on the adjacent page.
The first one is done for you)

1. Rahul let a dog sit inside his car...
2. Sonam served food to the people stuck in Rain
3. Nitin offered dry clothes to people
4. Rupal chanted Namaskar Mantra for a Puppy
5. Reena offered water,tea,coffee to people
6. Rohit allowed a bird to sleep in his window
7. Karan chanted “Shubh Thao aa Shakal Vishwa nu”
8. Seema spoke very politely with all.
9. Preeti gave lift to a small girl stuck in rain



Answers : 1 - 3 , 2-1 , 3-5 , 4-9 , 5-2 , 6-4 , 7-6 , 8-7 , 9-8

Pujya Gurudev's Divine words during Paryushan
....transformed into action during heavy rains
which took place in Mumbai!



Our Gurubhakts from Parasdharm held a helping hand to people who were stuck in rain.



Providing Sleeping place at Parasdharm!



Providing food at Ghatkopar Station!



Providing food at Parasdharm!



Providing food hampers to the needy!



Providing food to our community Helpers!



Providing hot beverages at Parasdharm!



Contact :

Parasdharm
Vallabhbaug Lane, Tilak road
Ghatkopar east, Mumbai 77

10th September 2017

12

LOOK n LEARN

Tel : 022 21027676

With Pujya Gurudev's inspiration, Arham Yuva Seva group
Spread the message of... "Gift A Smile" this Paryushan
as well as they followed it during heavy rains!

Our Gurubhakts from Pawandham
held a helping hand to people
who were stuck in rain.



Giftng a smile!



Providng water
to the pedestrians!



Providng dry snacks!



Providng food
to the needy!



Providng food - water
in public transport!



Providng food
in remote areas!

Contact :

Pawandham
Mahavir Nagar, BCCI ground
Kandivali west, Mumbai 67
Tel : 022 28093833

10th September 2017



LÔÖK n LEARN



The Grumpy Bee



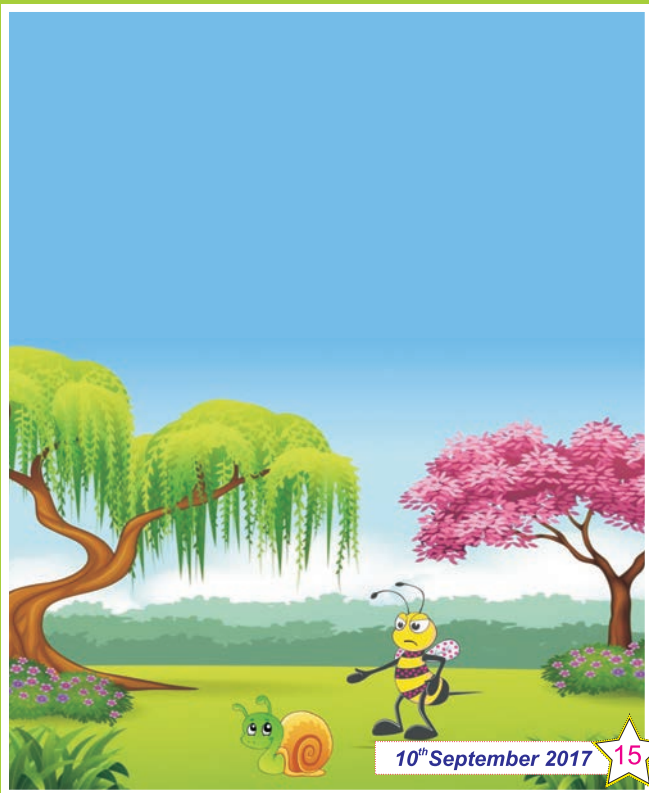
Once a mother bee was very much worried about her child.

As the child was very grumpy and angry all the time, the child bee would always be sad. So all the friends named her Grumpy Bee.

All the bee friends would avoid the Grumpy Bee and not play with her.

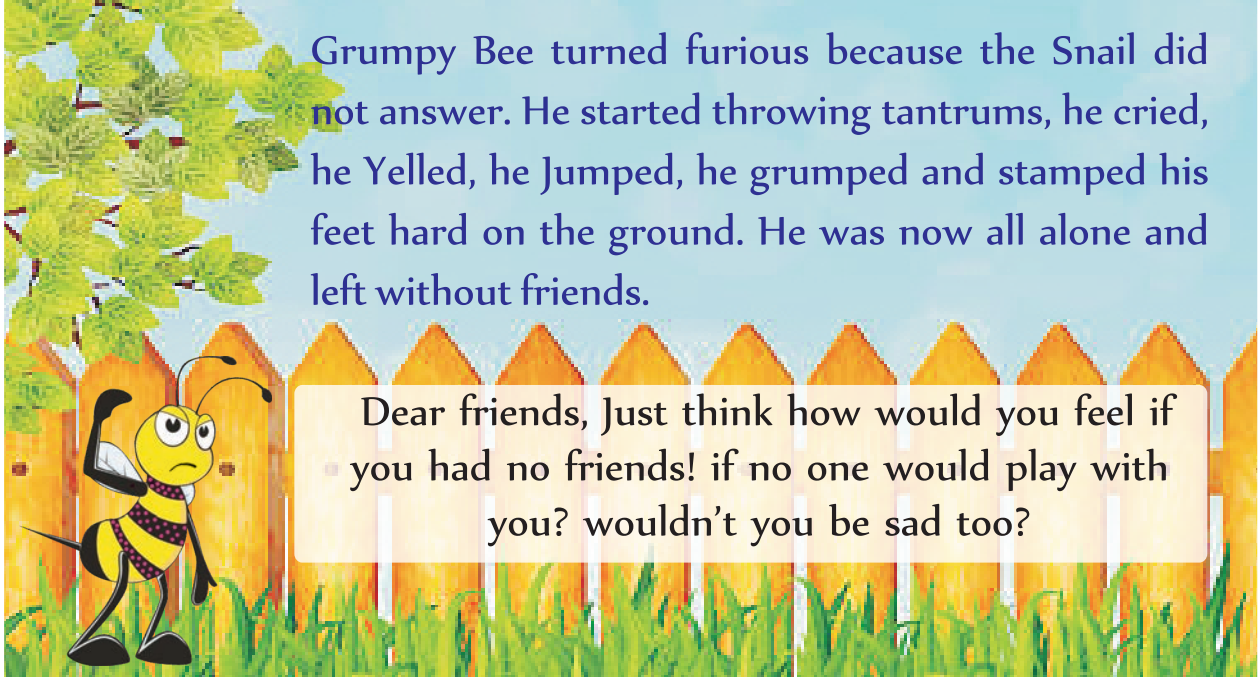
The worried mother Bee kept on Convincing the child Grumpy Bee to go out and play with her friends.

Out! went the Grumpy Bee in anger! He told the other Bees “I have come to Play with you all,” Come on Play with me. But the two Bees flew away and refused to play with Grumpy Bee. They said... We don't want to play with a friend who is rude, and has a angry Grumpy face.



After some time Grumpy Bee met a big Sleepy Snail. The snail looked at him and Smiled. But Grumpy Bee , being Grumpy had a very angry look on his face and No Smile. He asked the Sleepy Snail, “Will you play with me.”Sleepy Snail did not reply and just started moving ahead, as he did not like a Sad & Grumpy faced friend.

Dear Friends, Have you ever observed Parmatma's and Pujya Gurudev's face? Is it Sad? Are they ever unhappy ? Is their face Grumpy? No! never! Our Parmatma and Pujya Gurudev always have a smile on their face.



Grumpy Bee turned furious because the Snail did not answer. He started throwing tantrums, he cried, he Yelled, he Jumped, he grumped and stamped his feet hard on the ground. He was now all alone and left without friends.

Dear friends, Just think how would you feel if you had no friends! if no one would play with you? wouldn't you be sad too?

The Grumpy Bee then met a smiling flower. He said to the Grumpy Bee... You must always smile and feel happy. You must always speak softly and politely with everyone. If we have a smiling face then all shall be our friends and all will also play with us.

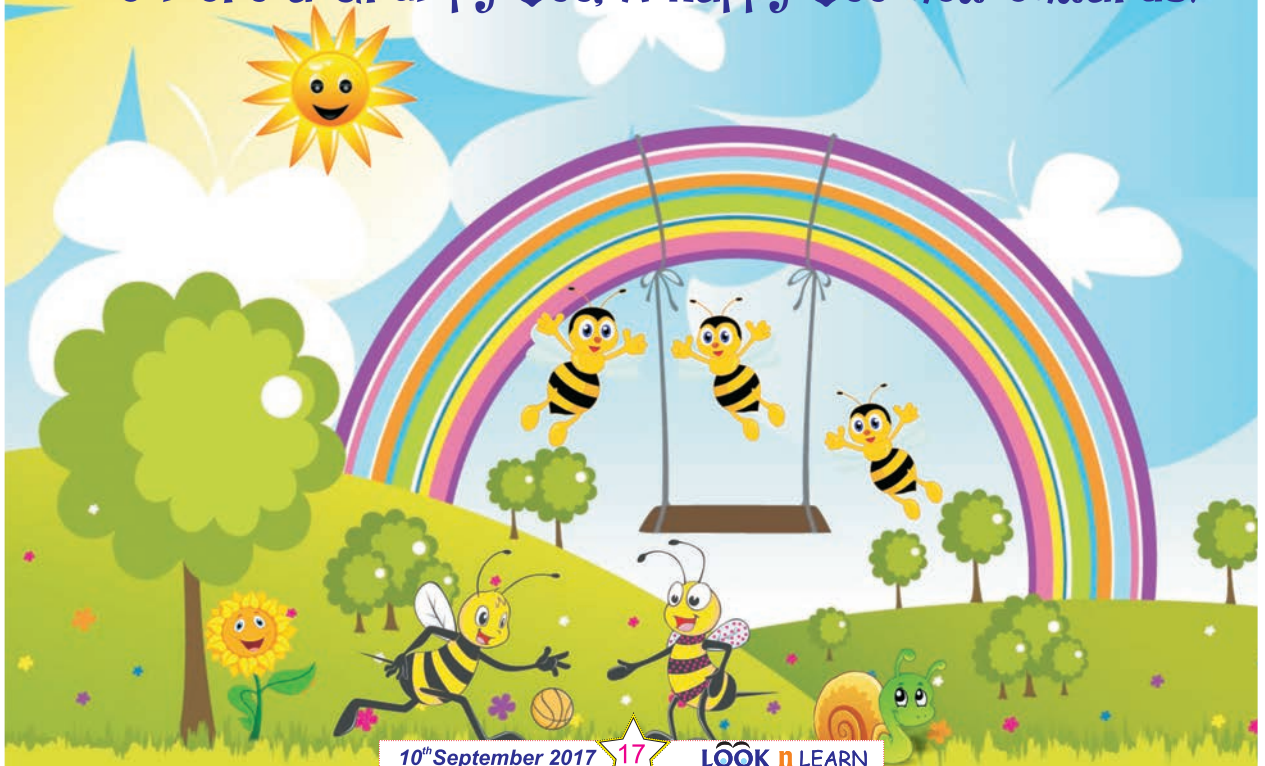


After the Smiling flower's true advice. Grumpy Bee thought and said "Surely dear friend, I will try." So Slowly Grumpy Bee changed his behavior and his attitude. He started singing, dancing with joy and had a smile on his face. He felt everything nice and beautiful around him. Everyone around him started playing and dancing with him and Grumpy Bee was very happy. They all had fun together.

So kids always remember Spread Love and gift a Smile.



No more a Grumpy Bee, A happy Bee now onwards!



राष्ट्रसंत पूज्य गुरुदेव श्री नगमुनिजी महाराज साहेब के जन्मोत्सव के अवसर पर

हजारो साधर्मीक परिवारों एवम् जरूरियातमंदो के साथ
अबोल जीवो की पीड़ा भी प्रसन्नता में परिवर्तित हो जाती है,
तब जन्मोत्सव महोत्सव बन जाता है



मानवता महोत्सव

गत पाँच वर्ष में
मानवता महोत्सव की
यह है विविध
प्रवृत्तियाँ

15 लाख से अधिक
गरीबो को आहार

विविध आश्रम में
30,000 से अधिक
विविध सहाय

लातुर दुष्काल में
दो चारा बैंक बनायी

26,000 से
अधिक विद्यार्थीओं को
एज्युकेशन
सहाय

50,000 से
अधिक दर्दीओंको
मेडीकल सहाय,
जैसे मेडीसीन,
ओप्रेसन्स,
आय केम्पस,
ऑर्थोपेडिक केम्पस,
ब्लड केम्पस,
कॅटरेक्ट ओपरेशन्स,
डायलीसीस आदि

1 लाख बुक्स द्वारा
एज्युकेशन सहाय

15,000 से
अधिक वॉटर पॉटस् का
गौशाला एवम्
पांजरापॉल में
वितरण

60,000 से
अधिक
जरूरियातमंदो को
ग्रोसरी कीटस्,
ब्लेन्केटस्
आदि
जीवन जरुरी
साधन एवम्
सामग्री

20,000 से
अधिक
बकरीओं को
जीवतदान

पूर पिडीत
पशुओ के लिए
हजारो टन
घासचारा

21 लाख का
चेक
श्री समस्त महाजन को
बनासकांठा की
अलग अलग
गौशाला
एवम्
पांजरापॉल के लिए



50 लाख का चेक गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री
श्री विजयभाई रूपाणी को गुजरात पुर रत्न के लिए अर्पण किया

24th Sept. 2017 - राष्ट्रसंत पूज्य गुरुदेव श्री का 47th जन्मोत्सव - मानवता महोत्सव
पावनधाम - कांदिवली में मानवता के सत्कार्यों के साथ मनाया जायेगा।

For Any Enquiry please Contact : +91 7666708869 | For Online Donation : www.arham.org/donate

E-mail : info@arham.org | Website : www.arham.org | [YouTube](https://www.youtube.com) [Facebook](https://www.facebook.com) [Twitter](https://www.twitter.com) [Instagram](https://www.instagram.com) /AYSIndia



What's the size of a Blessing (krupa) we receive from Parmatma?

A boy asked the father : **What's the size of a Blessing (Krupa), we receive from Dev, Guru and Parmatma?**

The father looked up to the sky and seeing an airplane asked the son...
What's the size of that airplane?

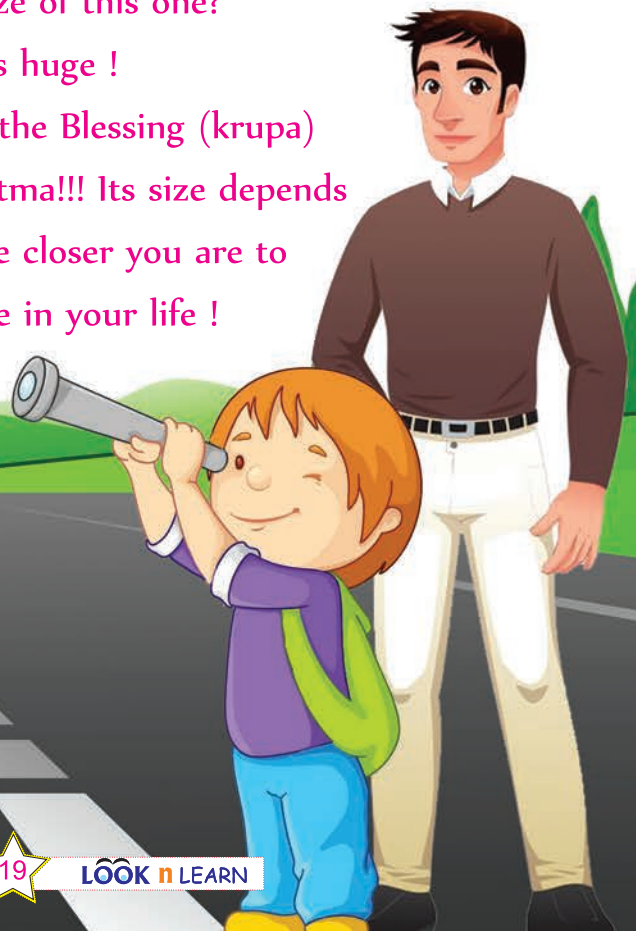
The boy answered : **It's very small, I can barley see it...**

So the father took him to the airport and as they approached an airplane

Father asked : **And now, what is the size of this one?**

The boy answered : **Wow daddy, this is huge !**

Then the father told him : **Similarly is the Blessing (krupa) we receive from Dev, Guru and Parmatma!!! Its size depends on how distant you are from him... The closer you are to him, the greater they will be in your life !**

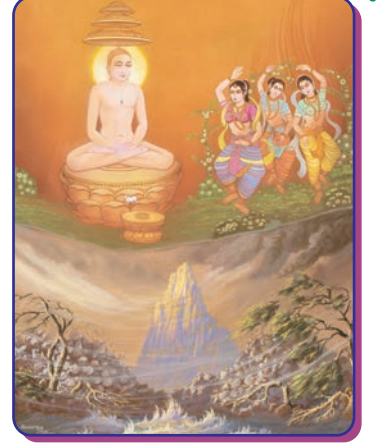


भक्तामर गाथा

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभिर्, नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम्।
 कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन, किं मन्दराद्रिशिखिरं चलितं कदाचित्॥१५॥

अर्थ

यदि आपका मन देवांगनाओं के द्वारा किंचित् भी विकृति को प्राप्त नहीं कराया जा सका, तो इस विषय में आश्चर्य ही क्या है? पर्वतों को हिला देने वाली प्रलयकाल की पवन के द्वारा क्या कभी मेरु का शिखर हिल सका है? नहीं।



शब्दार्थ

चित्रं	: आश्चर्य	कल्पान्त	: प्रलय के
किमत्र	: ही क्या है	काल	: समय
यदि	: यदि	मरुता	: हवा
ते	: आपका	चलिता चलेन	: चला देने वाली
त्रिदशांगनाभिर्:	देवांगनाओं के द्वारा	किं	: क्या
नीतं	: प्राप्त होना	मन्दराद्रि	: सुमेरु पर्वत के
मनागपि	: जरा भी	शिखिरं	: चोटी को
मनो	: मन	चलितं	: हिला सकी है
न	: नहि	कदाचित्	: कभी
विकारमार्गम्	: विकारमार्ग को		



राज वैभव प्रदायक काव्य